



श्री रामचन्द्र कृपालु

संत तुळसीदास

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन
हरण भव भय दारुणम्

नव कञ्ज लोचन कञ्ज मुख
कर कञ्ज पद कञ्जारुणम्

कन्दर्प अगणित अमित छवि
नवनील नीरद सुन्दरम्

पटपीत मानहु तडित रुचि शुचि
नौमि जनक सुता वरम्

भजु दीनबन्धु दिनेश दानव
दैत्य वंश निकन्दनम्

रघुनन्द आनन्द कन्द
कौशलचन्द दशरथ नन्दनम्

शिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु
उदार अंग विभूषणम्

आजानुभुज शर चाप धर

संग्रामजित खर दूषणम्

इति वदति तुळसीदास

शंकर शेष मुनि जन रञ्जनम्

मम हृदय कुञ्ज निवास

कुरु कामादि खल दल भञ्जनम्

श्री रामजयम्